आर. एन. आई. रजि. नं. यू. पी. एच. आई. एन.-2000/1679 मूल्य 20/- रुपये एस. एस पी/एल. डब्लू/एन. पी-372/2017-19

हास्य व्यंग्य की अनूठी पत्रिका ISSN 2395-4976

अट्टहास

अब अट्टहास इंटरनेट पर भी उपलब्ध www.writeconnectindia.com/ www.attahas.page

अतिथि संपादक
अरुण अर्णव खरे

हास्य-व्यंग्य

दशहरा-दीपावली विशेषांक
अक्टूबर 2019

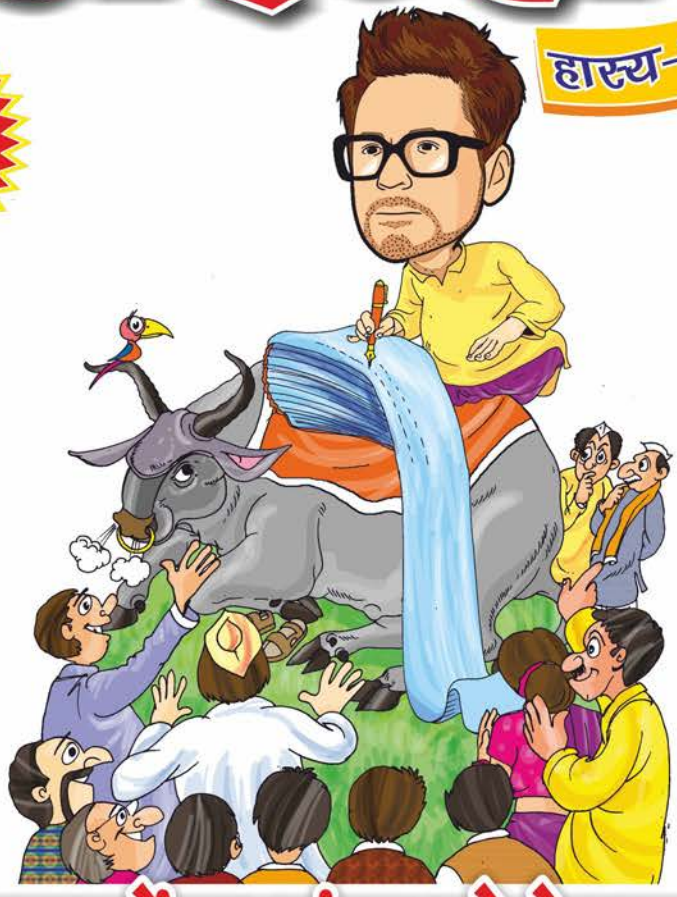

ताली बजायें पर व्यंग्य को बेताल न होने दें

– अंशू प्रधान

व्यंग्यकार सर्वश्री सुभाष चन्दर, यशवंत कोठारी, डॉ अजय जोशी, के. के. आस्थाना, दिलीप तेतरबे, श्रवण कुमार उर्मलिया, डॉ. कीति काले, गुरमीत बेदी, विप्लव वर्मा, अरुण अर्णव खरे, निर्मल गुप्त, अनूप शुक्ल, वीरेंद्र नारायण झा, राज शेखर चौबे, उमाशंकर मनमौजी, वीरेंद्र सरल, डॉ. कमलेश द्विवेदी, मुकेश नेमा, डॉ प्रदीप शशांक, विनोद पाण्डेय, मीना अरोड़ा, अंशु प्रधान, डॉ. अर्चना पाठक, विनोद कुमार विक्की, पूजा दुबे, ऋचा माथुर, रुपाली नागर 'संझा' आदि।

छँटे हुए रचनाकारों की छँटी हुई रचनाएं

अट्टहास

सम्मान
से सम्मानित किये गये हास्य-व्यंग्य रचनाकारों की सूची

अट्टहास शिखर सम्मान

(1990) श्री मनोहरश्याम जोशी (दिल्ली)
(1991) श्री शरद जोशी (मुम्बई)
(1992) श्री गोपाल प्रसाद व्यास (दिल्ली)
(1993) श्रीयुत् श्रीलाल शुक्ल (लखनऊ)
(1994) श्री नरेन्द्र कोहली (दिल्ली)
(1995) श्री ओम प्रकाश 'आदित्य' (दिल्ली)
(1996) श्री रविन्द्रनाथ त्यागी (देहरादून)
(1997) श्री हुल्लड़ मुरादाबादी (मुम्बई)
(1998) श्री माणिक वर्मा (भोपाल)
(1999) पद्मश्री के. पी. सक्सेना (लखनऊ)
(2000) श्री शैल चतुर्वेदी (मुम्बई)
(2001) श्री लतीफ घोंघी (महासमुन्द)
(2002) श्री मुकुट बिहारी सरोज (ग्वालियर)
(2003) श्री अशोक चक्रधर (दिल्ली)
(2004) श्री शंकर पुणतांबेकर (महाराष्ट्र)
(2005) पद्मश्री कन्हैयालाल नन्दन (दिल्ली)
(2006) श्री गोपाल चतुर्वेदी (लखनऊ)
(2007) श्री अल्हड़ बीकानेरी (दिल्ली)
(2008) श्री गोविन्द व्यास (दिल्ली)
(2009) डॉ. शेरजंग गर्ग (दिल्ली)
(2010) श्री सुरेश उपाध्याय (होशिंगाबाद) म.प्र.
(2011) श्री मधुप पाण्डेय (नागपुर) महाराष्ट्र
(2012) श्री प्रदीप चौबे (ग्वालियर) म.प्र.
(2013) डॉ. उर्मिल थपलियाल (लखनऊ)
(2014) डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी (भोपाल)
(2015) श्री जैमिनी हरियाणवी (दिल्ली)
(2016) श्री हरि जोशी (भोपाल)
(2017) श्री सुरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
(2018) श्रीमती सूर्यबाला लाल (मुम्बई)

अट्टहास युवा सम्मान

(1990) श्री प्रदीप चौबे (ग्वालियर)
(1991) श्री प्रेम जनमेजय (दिल्ली)
(1992) डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी (भोपाल)
(1993) श्री सुरेश नीरव (दिल्ली)
(1994) श्री सुरेन्द्र दुबे (जयपुर)
(1995) डॉ. हरीश नवल (दिल्ली)
(1996) डॉ. सूर्य कुमार पाण्डेय (लखनऊ)
(1997) श्री विनोद साव (दुर्ग)
(1998) डॉ. सुरेश अवस्थी (कानपुर)
(1999) श्री नीरज पुरी (बैतूल)
(2000) श्री शंभू सिंह मनहर (मुरैना)
(2001) श्री ईश्वर शर्मा (महासमुन्द)
(2002) डॉ. सुरेन्द्र दुबे (रायपुर)
(2003) श्री गिरीश पंकज (रायपुर)
(2004) श्री प्रवीण शुक्ल (दिल्ली)
(2005) डॉ. सुनील जोगी (दिल्ली)
(2006) श्री सरदार मनजीत सिंह (हरियाणा)
(2007) श्री तेज नारायण शर्मा 'बेचैन' (मुरैना)
(2008) श्री सुभाष चन्दर (दिल्ली)
(2009) श्री संजय झाला (जयपुर)
(2010) श्री आलोक पुराणिक (दिल्ली)
(2011) श्री दीपक गुप्ता (दिल्ली)
(2012) श्री अनुराग बाजपेयी (जयपुर)
(2013) श्री मुकुल महान (लखनऊ)
(2014) श्री रमेश मुस्कान (आगरा)
(2015) श्री ललित लालित्य (दिल्ली)
(2016) श्री नीरज बधवार (दिल्ली)
(2017) श्री अशोक स्वतंत्र (दिल्ली)
(2018) डा. वागीश सारश्वत (मुम्बई)

वर्ष–20/2019 अंक–6, अक्टूबर 2019

R.N.I.Reg. No.U P H I N- 2000/1679
ISSN NO- 2395-4957
मूल्य 20/-

अट्टहास®

हास्य व्यंग्य

हास्य तरंगों से रंगे, जन जीवन के अंग।
जुड़िये मन से आप भी, अट्टहास के संग

प्रधान संपादक — अनूप श्रीवास्तव
संपादक — शिल्पा श्रीवास्तव
कार्यकारी संपादक — रामकिशोर उपाध्याय
सम्पादकीय प्रभारी — कृष्णा
उपसंपादक — समीना खान

सम्पादकीय
अभिषेक, पवन गौतम, देवांशी, अविका

संयोजन — जितेन्द्र कुमार
रेखांकन — विश्वम कृष्णा माधव
वित्तीय सलाहकार — अरुण कुमार
विधि सलाहकार — अभय कुमार

संपादकीय कार्यालय
10, गुलिस्तां कॉलोनी, लखनऊ–226001
ईमेल : anupsrivastavalko@gmail.com
मोबाइल नंबर– 09335276946
दिल्ली कार्यालय: 20, चेतना अपार्टमेन्ट,
प्लाट नं0–6, आई.पी. एक्सटेंशन,
मदर डेयरी के पास, पटपड़गंज, दिल्ली
मोबाइल– 09911906377

ब्यूरो प्रमुख

कर्नाटक : अभिषेक श्रीवास्तव
मोबाइल– 08867085656

मध्यप्रदेश : अरुण अर्णव खरे
डी 1/35 दानिश नगर, होशंगाबाद रोड
भोपाल–462026 मो.– 09893007744

अहमदाबाद : नवीन प्रधान
सी–402 विराज विहार, 4 जोधुपर सैटेलाइट
अहमदाबाद 380015

जयपुर : लक्ष्मी अशोक
शिल्पायन, 3/6, एस एफ एस
अग्रवाल फार्म मानसरोवर जयपुर
मोबाइल–09467425258

रायपुर : यशवंत पुरोहित
कैलाश भवन, शिवमंदिर रोड,
रायपुर 492001, मो.–09425207911

पूना : अशोक कुमार
मकान नं–503, बिल्डिंग–एस–7 सन
पेराइाइज, आनंद नगर, सिंहगढ़रोड–पूना

बिहार : राजेश मंझवेकर
मां–बाबा सदन, तरौनिया एरिया,
मंझवे, नवादा (बिहार)
मो: 9334988252/ 8709748970

देहरादून : डॉ बुद्धिनाथ मिश्र
देवघा हाउस, स्ट्रीट–5 बसंत बिहार,
इन्क्लेव– 248 मो.– 9412992244

शिमला : सुदर्शन वशिष्ठ
अभिनंदन, कृष्ण नगर, लोअर पंथा घाटी,
शिमला मो.– 9450114576

स्थायी स्तम्भ

अतिथि संपादकीय–व्यंग्य परिद्रश्य–अरुण अर्णव खरे–4, मौसमी रंगत–विप्लव वर्मा–18, व्यंग्यकारों को जन्मदिन की बधाई–20, अट्टहास टाइम्स–चंडीगढ़ में इतिहास रच गई व्यंग्य की महापंचायत, अट्टहास के विशेषांक का लोकार्पण भी हुआ–गुरमीत बेदी–30 मनमौजी की मौज–उमाशंकर मनमौजी–38,

अनुक्रम

व्यंग्य

चन्द्रयान : विमर्श की खूंटी पर खाली पिंजरा–निर्मल गुप्त–5, ताली बजायें पर व्यंग्य को बेताल न करें–अंशू प्रधान–7, हिंदी साहित्य की नर्सरी थे प्रेमपत्र– मुकेश नेमा–10, रे–भैय्या–ओ–दादा–रुपाली नागर 'संझा'–12, हमारा रिश्वतपुरा–के के आस्थाना–15, हिंदी व्यंग्य में पीढ़ियों का अन्तराल–यशवंत कोठारी–17, क्या कर रहे हैं बापू के तीनों बन्दर–डॉ. अजय जोशी–19, गाँव की नौटंकी–सुभाष चन्दर–21, कच्चा चिट्ठा, पक्का चिट्ठा–अरुण अर्णव खरे–25, ईमानदारी का मौसम–श्रवण कुमार उर्मलिया–26, सम्मान लुभाता है मुझको–दिलीप तेतरवे–29, कटहल समझ रखा है मुझको–वीरेन्द्र नारायण झा–33, मंदी से ज्यादा बंदी का डर, रजनीगन्धा के वियोग में तुलसी बिरहन–विनोद कुमार विक्की–35 जाना गृह लक्ष्मी का–डॉ. प्रदीप शशांक–37, जो हुआ सो हुआ–राजशेखर चौबे–39, शिक्षा का स्मार्टीकरण बनाम फजीहतीकरण–डॉ. कीर्ति काले–40, दर्द–ए–द्रोणाचार्य–वीरेन्द्र 'सरल'–42, ये टीआरपी नहीं आसां, बस इतना समझ लीजिये–विनोद पाण्डेय–44, बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम–मीना अरोड़ा–46, ये इश्क नहीं आसां–डॉ. अर्चना पाठक–49, मोबाइल–अनूप शुक्ल–51

व्यंग्य कवितायें

चेहरों पर चढ़े मुखौटे–ऋचा माथुर–6, कितने हमसे आगे हैं–डा.कमलेश द्विवेदी–9, आयोजनों की होड़–कु0 पूजा दुबे –28, मैं सौ सौ दीप जलाई हूँ–कु0 पूजा दुबे–28, हर उत्तर तो युधिष्ठिर नहीं होता – अंजू निगम–45

'अट्टहास' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादस्पद मामले लखनऊ न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन और संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक शिल्पा श्रीवास्तव द्वारा प्रिन्ट आर्ट कैन्ट रोड, लखनऊ से मुद्रित तथा 10, गुलिस्तां कालोनी, लखनऊ उ0प्र0 से प्रकाशित।

अतिथि संपादकीय

अरुण अर्णव खरे

व्यंग्य परिद्रश्य

फागुन आयो रे' गीत मैं आजकल जब भी सुनता हूँ तो नज़रों के सामने व्यंग्य का वर्तमान परिदृश्य उपस्थित हो जाता है। व्यंग्य के उपवन में इस समय न केवल फागुन पसरा हुआ है अपितु दूसरे मौसमों का प्रवेश तक वहाँ निषेध किया हुआ है। डाल–डाल और पात–पात पर व्यंग्यकार विराजमान दिखाई दे रहे हैं। व्यंग्य का यह स्वर्णकाल है पर जब किसी चीज़ का स्वर्णकाल आता है तो अपने साथ अनेक तरह की विसंगतियाँ भी लाता है। व्यंग्य आज जितनी प्रचुरता में लिखा जा रहा है तो यह प्रश्न बहुत स्वाभाविक रूप से ज़ेहन में उठता है कि क्या उसमें से अधिकांश व्यंग्य, की मानक कसौटियों पर सचमुच में खरा उतर रहा है या केवल संख्या में इज़ाफ़ा कर रहा है ।

आज के व्यंग्य को लेकर बहुत संशय भी है और चिन्ता भी है। आज जो व्यंग्य लिखा जा रहा है उसकी उम्र को लेकर संशय है कि उसके हिस्से में कितनी सांसें हैं। ऐसी कितनी रचनाएँ सामने आई हैं जिन्हें पॉच या दस साल बाद भी लोग याद करें। गिनने बैठेगें तो हाथों में अंगुलियाँ ज़्यादा पाएँगे रचनाएँ कम। व्यंग्य से प्यार करने वालों की चिन्ता भी यही है कि परसाई, जोशी या ज्ञान की परम्परा को आगे ले जाने वाली कालजयी रचनाओं का सरोवर सूखता जा रहा है। ये स्थिति गद्य व्यंग्य की भी है और पद्य की भी, यद्यपि जब व्यंग्य की चर्चा होती है तो केवल गद्य व्यंग्य ही केन्द्र में होता है, पद्य व्यंग्य को नज़र अंदाज किया जाता है। हक़ीक़त यह है कि पद्य व्यंग्य की भी अपनी भूमिका है और अहमियत भी। चार शताब्दी से अधिक का समय हो गया लेकिन कबीर जैसा चमत्कारी कवि दूसरा नहीं हुआ। उनका लिखा आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

व्यंग्य परिदृश्य इन दिनों अजिबिगरीब माहौल से गुजर रहा है। जिसे देखो वही बौराया हुआ है । बड़े मियां तो बड़े मियां,छोटे मियां सुभान अल्लाह!

व्यंग्य के झूले में पेंगे लेने के बजाय हम अपने अपने पटरे बिठाने में लगे हैं।

वैसे आज भी विषयों की कोई कमी नहीं है। हर कालखंड की अपनी अलग विशेषताएँ, जिज्ञासाएँ और सरोकार होते हैं... इस कालखंड के भी हैं। जो लेखक इन्हें पहिचान रहे हैं वे अच्छा लिख भी रहे हैं और स्वयं को स्थापित भी कर पा रहे हैं। जो समय की नब्ज पहिचानने में ग़लती कर रहे हैं वे भीड़ का एक हिस्सा मात्र हैं आगे–आगे चलने वाले ध्वजवाहक नहीं। अट्टहास की पहिचान एक प्रयोगधर्मी पत्रिका है। पिछले कुछ वर्षों में अट्टहास ने अनेक प्रयोग करते हुए अनेक संग्रहणीय अंक निकाले हैं और अपनी विशिष्टता कायम रखी है । बहुत से नए पुराने लेखकों को अतिथि संपादक का दायित्व सौंपकर पत्रिका ने नए विचारों, खुलेपन और वर्तमान की ताजगी से पाठकों का साक्षात्कार कराया है । पत्रिका को बहुत से युवा व्यंग्यकार देने का श्रेय तो है ही साथ ही नए नए विषयों का संधान करने और उनपर विमर्श करने का भी श्रेय प्राप्त है। तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अट्टहास की यात्रा अनवरत् रूप से जारी है और यह यूँ ही जारी रहे, इसके लिए व्यंग्य की चिंता करने वाले सभी लोगों से अनुरोध है कि अट्टहास की यात्रा में हर तरह से अपना सहयोग दें।■

डी–1/35 दनिश नगर, होशंगाबाद रोड,
भोपाल– 462026 (म0प्र0) मोबाइल– 9893007744

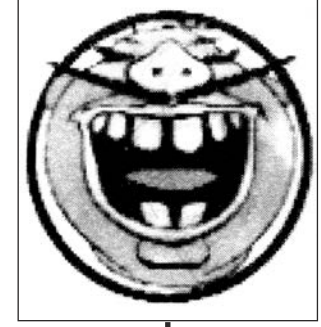

निर्मल गुप्त

चन्द्रयान : विमर्श की खूंटी पर खाली पिंजरा

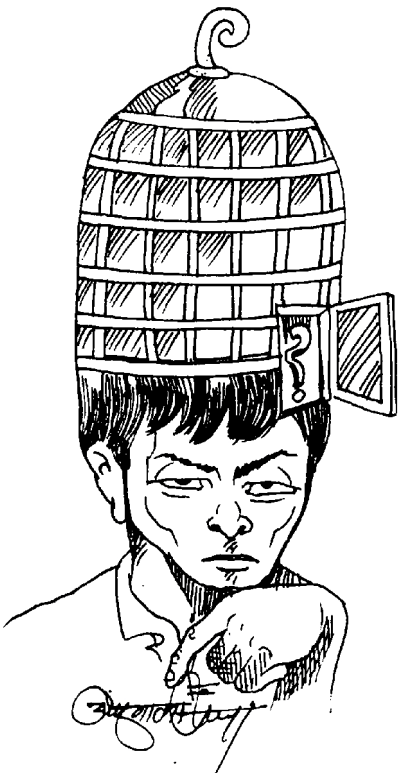

चन्द्रयान चाँद की सतह पर उतरने को है और जनता इतरा रही है। सरकार अपने काम में लगी हैं। आमजन को मानो अनहोनी का गहना अथवा चन्द्र खिलौना मिल जाने की पुख्ता उम्मीद है। यह उस समय की बात है जब वक्त एनालॉग से डिजिटल हो गया था लेकिन सड़क किनारे बैठ तोते के जरिये ज्योतिषगिरी करने वाले गुणीजी का भविष्यकाल में ताकाझांकी का सनातन धंधा यथावत चलता चला आ रहा था। जब कभी उन्हें कोई नई सूचना मिलती तो वह तुरंत तोते को हरी मिर्च थमाते हुए पूछते– भईये, सच सच बता, हमारा आगामी अतीत कैसा होगा ?

गुणी जी, आप भारीभरकम तत्सम शब्दावली से मामले को इतना क्यों उलझाते हो ? अपनी बात सादा तरीके से क्यों नहीं कह देते। सबसे पहले यह बताओ कि जो हो रहा है या अब तक हुआ, उससे क्या फायदा मुझे मिला? तोता अक्सर पंजे में दबी मिर्च,भुट्टा या कैरी को थाम, इसी तरह के जरूरी सवाल उठाता।

हे, विवादी तोते, बात का बतंगड़ न बना। जब तक कोई जिज्ञासु इहलोक का हाल जानने न आता दिखे, तब तक तू सिर्फ मिर्च कुतरा कर या हरिभजन किया कर। हिदायत मिलती।

लेकिन मेरा मन तो हरदम कपास ओटने को करता है। तोता मंशा प्रकट करता।

कपास ही क्यों? सवाल होता।

गुणीजी, आपको तो पता होगा, इधर चीन चाँद पर जाकर कपास का बीज अंकुरित कर लाया। उधर हैकिंग गुरु ईवीएम से जुड़ा सनसनीखेज खुलासा सामने आया। कागज़ी चुनाव तो अलबत्ता न हुए पर इसे लेकर लिंचिंग दृस्नेचिंग होती रही। आगे भी होगी ही। वैसे नीबू हो या बेलेट, कागज़ी ही अच्छे। चीन इस अंकुरण की आड़ में अंतरिक्ष में जाकर ख्याली पुलाव के साथ डिब्बाबंद पकी–पकाई चौमिंग–मोमो आदि तमाम ग्रह–नक्षत्रों को निर्यात करने लगा। अब तो वह मंगल–शनि आदि पर प्लाट बेचने की जुगत में है। उसने सेटेलाईट के सहारे स्पेस में विज्ञापनीय पट हर ओर लटकवा दिए हैं। कोई कह रहा था कि उसने विज्ञापन पर मोटे अक्षरों में खुल्लम–खुल्ला लिखवा रखा है–आओ दिलदार चलें, चाँद के पार चलें। तोता सविस्तार जानकारी देता।

इससे क्या ? उगा लाया तो उगा लाया। उगाता रहे। यहाँ –वहां प्लाट बेचता है तो बेचता रहे।

चीन ने 'मेड इन मून' वाली कपास की आड़ में हमारे देशज चरखे और चर्चा की

कपास को ही न सिर्फ कदीमी मंडी से बाहर किया वरन अपनी साम्राज्यवादी लूटपाट को अन्य आकाशीय ग्रहों तक ले गया। ईवीएम हैकिंग को लेकर खूब मगजमारी हुई पर कागजी बेलेट और अच्छे दिन न तो ने आने थे, न आये, सत्ता के लिए लिंचिंग स्नेचिंग की आशंकावादी मचमच मची है तो मचती रहे ।

चल। चल तू अपना काम देख। तू तोता है या वाचाल खबरची। गुणीजी उसे डपटते।

तोता–गुणीजी सम्वाद (या वाद–विवाद) निर्विघ्न चलता रहा है।चलता ही जा रहा है। अभी भी हथेली और माथे पर चिंतातुर लकीरें लिए उनके पास सज्जनजी टाइप लोग गाहेबगाहे आते ही रहते हैं। वे आते ही कहा करते–महाराज बताएं, भरे जाड़े में चन्द्रग्रहण के बाद ठंडे पानी से सरेआम नहाना या गर्मागर्म पानी से स्नान धर्मसंगत माना जाएगा। सूर्यग्रहण पर ऑफिस से केजुअल लीव लेनी उचित रहेगी या उस मौके पर अर्जित अवकाश की एप्लीकेशन भेजना ही ठीक रहेगा। कृपया वज़ाहत कर दें।

यह सुन गुणीजी असमंजस में पड़ते तो तोता ठहाका लगाता। खिल्ली उड़ाने के अंदाज़ में कहता– इसका सही उत्तर तो मेरे डाटाबेस में भी नहीं। ज़रा मेरा पिंजरा खोल दें तो गूगल की तलहटी में जाकर सही बात पता लगाकर आऊँ कि इस बारे में सोशलमीडिया वाले सोशलिस्ट क्या राय रखते है।

एक बार गुणीजी ने पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया। तोता आननफानन उडनछू हुआ। तब सज्जनजी ने पूछा था दृयह वापस लौट कर न आया तो?

तो क्या? जान छूटेगी इससे। मैं पेड़ पर बनी किसी कोटर से नया तोता तो पकड़ कर लाने से रहा। यदि कोई हाईटेक डिजिटल तोता किसी साप्तहिक हाट में घटी दरों पर बिकता दिखा तो उसे उठा लाऊंगा। तोते हमारे अहद में लगभग सच की रटंत लगाते हैं। वे नखरीले ज़रा कम लेकिन बाकमाल सरोकारी होते हैं।

तब तक मैं क्या करूं? सज्जनजी आदतन पूछ डाला।

अगली सूचना मिलने तक पानी से नहाना स्थगित रखो। यदि किसी ने धो कर निचोड़ दिया तो तुम जानो।एहतियात ही बचाव है।अलबत्ता अपनी ड्राइक्लीनिंग करवाना चाहो तो करवा सकते हो। आभासी स्नान दृध्यान में कोई हर्ज़ नहीं। गुणीजी ने दो टूक कह दिया। तोता देश दृदिगंत का चक्कर लगा लौट आया। वह उत्साहित लगा। गुणीजी पूछते–इस समय के फलित का कोई सटीक सुराग कहीं मिला?

नहीं, फिलवक्त मुल्क भर में स्नान, ध्यान, प्लाट, कपास, बाज़ार, ऐशोआराम, पूँजी इत्यादि से इतर हथेली पर सरसों जमा लेने वाली राजनीतिक गार्डनिंग पर देशव्यापी बहस चल रही है।

यह कह तोता उड़ता और देखते ही देखते आसमान में गुम हो जाता। विमर्श की खूँटी पर टंगा उसका खाली पिंजरा गुणीजी की चिंताओं में डोलता रह गया। ■

208 छीपी टैंक, शिवचौक, आरजी कॉलेज के पास,
मेरठ –250001 मोबाईलः 8171522922

चेहरों पर चढ़े मुखौटे

ऋचा माथुर

चेहरों पर चढ़े मुखौटे हैं पर जाने दो
वो तो फिर भी अपने हैं पर जाने दो

दिल का क्या है रोता है हँसता है
तुमसे मरहम माँगा था पर जाने दो

देखो कैसे फिसले मेरी मुट्ठी से
रिश्ते कब ये अपने हैं पर जाने दो

हँसती खेली कूदी नाची मैं जब जब
कानों में गूंजी चीखें हैं पर जाने दो

तन्हा बिस्तर पर रो रो कर जागे हैं
फिर आँचल को तरसे हैं पर जाने दो

गुड्डे गुड़िया हाथों में और मस्ती थी
अब पत्थर से बैठे हैं पर जाने दो

तुम भी हँस लो मैं भी हँस लूँ दो पल को
कल फिर तन्हा रस्ते हैं पर जाने दो

Rz-21 यमुनोत्री एनक्लेव, गोपाल नगर, नजफगढ़,
नई दिल्ली–110043 मो0– 9717368420